# श्रीगणेश-स्तोत्रम्

ॐ-कारमाद्यं प्रवदन्ति सन्तो वाचः श्रुतिनामपि ये गृणन्ति ।
गजाननं देव-गणानतांघ्रिं भजेऽहमर्द्धेन्दु-कृतावतंसम् ।।१

पादारविन्दार्चन-तत्पराणां संसार-दावानल-भङ्ग-दक्षम् ।
निरन्तरं निर्गत-दान-तोयैस्तं नौमि विघ्नेश्वरमम्बुजाभम् ।।२

कृताङ्ग-रागं नव-कुंकुमेन, मत्तालि-मालां मद-पङ्क-लग्नाम् ।
निवारयन्तं निज-कर्ण-तालैः, को विस्मरेत् पुत्रमनङ्ग-शत्रोः ।।३

शम्भोर्जटा-जूट-निवासि-गङ्गा-जलं समानीय[१] कराम्बुजेन ।
लीलाभिराराच्छिवमर्चयन्तं, गजाननं भक्ति-युता भजन्ति ।।४

कुमार-भुक्तौ पुनरात्म-हेतोः, पयोधरौ पर्वत-राज-पुत्र्याः ।
प्रक्षालयन्तं कर-शीकरेण, मौग्ध्येन तं नाग-मुखं भजामि ।।५

त्वया समुद्धृत्य गजास्य-हस्तं, शीकराः पुष्कर-रन्ध्र-मुक्ताः ।
व्योमाङ्गने ते विचरन्ति ताराः, कालात्मना मौक्तिक-तुल्य-भासः ।।६

क्रीडा-रते वारि-निधौ गजास्ये, वेलामतिक्रामति वारि-पूरे ।
कल्पावसानं परिचिन्त्य देवाः, कैलास-नाथं श्रुतिभिः स्तुवन्ति ।।७

नागानने नाग-कृतोत्तरीये, क्रीडा-रते देव-कुमार-सङ्घैः ।
त्वयि क्षणं काल-गतिं विहाय, तौ प्रापतुः कन्दुकतामिनेन्दु ।।८

मदोल्लसत्-पञ्च-मुखैरजस्त्रमध्यापयन्तं सकलागमार्थान् ।
देवान् ऋषीन् भक्त-जनैक-मित्रं, हेरम्बमर्कारुणमाश्रयामि ।।९

पादाम्बुजाभ्यामति-कोमलाभ्यां, कृतार्थयन्तं कृपया धरित्रीम् ।
अकारणं कारणमाप्त-वाचां, तन्नाग-वक्त्रं न जहाति चेतः ।।१०

येनार्पितं सत्यवती-सुताय, पुराणमालिख्य विषाण-कोट्या ।
तं चन्द्र-मौलेस्तनयं तपोभिराराध्यमानन्द-घनं भजामि ।।११

पदं श्रुती-नामपदं स्तुतीनां, लीलावतारं परमात्म-मूर्तेः ।
नागात्मको वा पुरुषात्मको वेत्यभेद्यमाद्यं भज विघ्न-राजम् ।।१२

पाशांकुशौ भग्नरदं त्वभीष्टं, करैर्दधानं कर-रन्ध्र-मुक्तैः ।
मुक्ता-फलाभैः पृथु-शीकरौघैः, सिञ्चन्तमङ्गं शिवयोर्भजामि ।।१३

अनेकमेकं गजमेक-दन्तं, चैतन्य-रूपं जगदादि-बीजम् ।
ब्रह्मेति यं ब्रह्म-विदो वदन्ति, तं शम्भु-सूनुं सततं भजामि ।।१४

अङ्के स्थिताया निज-वल्लभाया, मुखाम्बुजालोकन-लोल-नेत्रम् ।
स्मेराननाब्जं मद-वैभवेन, रुद्धं भजे विश्व-विमोहनं तम् ।।१५

ये पूर्वमाराध्य गजानन! त्वां, सर्वाणि शास्त्राणि पठन्ति तेषाम् ।
त्वत्तो न चान्यत् प्रतिपाद्यमस्ति, तदस्ति चेत् सत्यमसत्य-कल्पम् ।।१६

हिरण्य-वर्णं जगदीशितारं, कविं पुराणं रवि-मण्डलस्थम् ।
गजाननं यं प्रवदन्ति सन्तस्तत् काल-योगैस्तमहं प्रपद्ये ।।१७

वेदान्त-गीतं पुरुषं भजेऽहमात्मानमानन्द-घनं हृदिस्थम् ।
गजाननं यन्महसा जनानां, विघ्नान्धकारो विलयं प्रयाति ।।१८

शम्भोः समालोक्य जटा-कलापे, शशाङ्क-खण्डं निज-पुष्करेण ।
स्व-भग्न-दन्तं[2] प्रविचिन्त्य मौग्ध्यादाकर्ष्टु-कामः श्रियमातनोतु ।।१९

विघ्नार्गलानां विनिपातनार्थं, यं नारिकेलैः कदली-फलाद्यैः।
प्रभावयन्तो मद-वारणास्यं, प्रभुं सदाऽभीष्टमहं भजे तम् ।।२०

।। फल-श्रुति ।।

यज्ञैरनेकैर्बहुभिस्तपोभिराराध्यमाद्यं गज-राज-वक्त्रम् ।
स्तुत्याऽनया ये विधिना स्तुवन्ति, ते सर्व-लक्ष्मी-निधयो[3] भवन्ति ।।१

।।श्रीगणेश-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

पाठान्तर : १. समादाय, २. अभग्न-दन्तं, ३. निलया।

❖❖❖

# श्रीगणेश-स्तोत्र (हिन्दी-रूपान्तर)

सभी **श्रुति-वाक्य** और **सिद्ध-वचन** जिन्हें '**आद्य ॐकार**' कहते हैं, **देव-गण** जिनके चरणों पर झुके रहते हैं, जिनके मस्तक पर **अर्द्ध-चन्द्र** आभूषण के समान शोभायमान है, उन **गजानन** की मैं वन्दना करता हूँ ।।१

निरन्तर प्रवाहित होनेवाले **मद-जल** द्वारा जो अपने चरण-कमलों की पूजा करनेवाले भक्तों की संसार-रूपी दावाग्नि को नष्ट करने में निपुण हैं, उन **रक्त-कमल** के समान आभावाले **विघ्नेश्वर** को मैं प्रणाम करता हूँ ।।२

जो नवीन **कुंकुम** से शरीर को लिप्त करते हैं और जो मद के पङ्क में फँसे **मतवाले भौरों** को अपने कानों के थपेड़ों द्वारा हटाते रहते हैं, उन **कामदेव-शत्रु** अर्थात् **भगवान् शङ्कर के पुत्र** अर्थात् **श्रीगणेश जी** को कौन भूल सकता है? ।।३

जो अपने कर-कमलों द्वारा **महेश्वर** के जटा-जूट से **गङ्गा-जल** को लेकर उसके द्वारा क्रीड़ा करने के बहाने से वहीं विराजमान **शङ्कर की पूजा** करते हैं, उन **गजानन** की वन्दना सभी भक्ति-पूर्वक करते हैं ।।४

जो **कार्तिकेय** द्वारा पिए गए **माता पार्वती** के दोनों स्तनों को अपने पान के लिए अपनी सुन्दर सूँड़ के जल-विन्दुओं द्वारा प्रक्षालित करते हैं, उन **गजानन** को मैं प्रणाम करता हूँ ।।५

हे **गजानन**! आप सूँड़ उठाकर उसके छिद्र द्वारा ऊपर की ओर जो स्वच्छ जल-विन्दु फेंकते हैं, वे ही काल-क्रम से मोतियों के समान प्रकाशमान होकर गगनाङ्गन में तारों के रूप में घूमते हैं ।।६

समुद्र में **गजानन** के जल-क्रीड़ा करने से सागर की जल-राशि उछल कर तटों का उल्लङ्घन करने लगती है, जिससे **देव-गण** महा-प्रलय की चिन्ता में पड़कर **कैलाश-पति भगवान् शङ्कर** की स्तुति करने लगते हैं ।।७

हे **गजानन**! आप **नागोत्तरीय** धारण कर **देव-कुमारों** के साथ जब क्रीड़ा करते हैं, तब **सूर्य** और **चन्द्र** क्षण भर के लिए अपनी काल-गति को छोड़कर आपके लिए क्रीड़ा-कन्दुक बन जाते हैं ।।८

जो अपने **मद-मत्त पाँच मुखों** द्वारा **देवों** और **ऋषियों** को निरन्तर सभी **आगम-शास्त्रों** का अर्थ बताते रहते हैं, भक्तों के जो एक-मात्र मित्र हैं, उन **सूर्य-जैसे रक्त-वर्ण हेरम्ब श्रीगणेश जी** की मैं शरण लेता हूँ ।।९

जो अपने अत्यन्त कोमल चरण-कमलों के स्पर्श द्वारा दया-पूर्वक **पृथ्वी** को धन्य करते हैं, जो बिना कारण के ही अपनी **सिद्ध वाणी** द्वारा सभी कार्यों के कारण हैं, उन **गजानन** को चेतना कभी नहीं छोड़ती ।।१०

जिन्होंने अपने **विशाल दाँतों** के अग्र-भाग से **पुराण** लिखकर **सत्यवती-पुत्र वेद-व्यास** को दिए, बहु-तपस्या से जिनकी उपासना की जाती है, उन **आनन्द-मय चन्द्र-मौलि** अर्थात् **भगवान् शङ्कर के पुत्र गजानन** की मैं वन्दना करता हूँ ।।११

जो श्रुति के पद होते हुए भी स्तुति के पद नहीं हैं अर्थात् जो **वेद**-प्रतिपाद्य नहीं हैं अथवा जिनका स्तवन पूर्ण रूप में नहीं किया जा सकता, जो **परमात्मा-मूर्ति** के लीलावतार हैं, जो **गज-मूर्ति** हैं या **पुरुष-मूर्ति**–यह समझ में नहीं आता, उन **आदि विघ्न-राज गजानन** की मैं वन्दना करता हूँ ।।१२

जो अपने चार हाथों में **पाश, अंकुश, भग्न दाँत** और **वर-मुद्रा** धारण किए हैं और सूँड़ के छिद्र से निकलते हुए मोतियों जैसे स्थूल जल-कणों द्वारा जो **शिव** और **भवानी** के शरीर का अभिषेक कर रहे हैं, उन **गजानन** की मैं वन्दना करता हूँ ।।१३

जो एक होकर भी अनेक रूपों में शोभा पाते हैं, जो **एक-दन्त गज** हैं, जो **चैतन्य-रूप** हैं, जो **जगत् के आदि-बीज** हैं, ब्रह्म-ज्ञानी जिन्हें **ब्रह्म** कहते हैं, उन्हीं **शम्भु-पुत्र श्रीगणेश जी** की मैं वन्दना करता हूँ ।।१४

जिनके दोनों नेत्र गोद में बैठी हुई अपनी **प्रियतमा** के मुख-कमल का दर्शन करने में मग्न हैं, जिनके मुख-कमल पर सदा कोमल मुस्कान रहती है, मद-भार से जो सदा विह्वल रहते हैं, उन **संसार-मोहक गणपति** की मैं वन्दना करता हूँ ।।१५

हे **गजानन**! जो पहले आपकी पूजा कर **समस्त शास्त्रों का अध्ययन** करते हैं, उन्हें आपके अतिरिक्त अन्य कोई प्रतिपाद्य पदार्थ नहीं मिलता। अन्य कोई द्रव्य सत्य प्रतीयमान होने पर भी असत्य ही सिद्ध होता है ।।१६

स्वर्ण के समान जिनके शरीर की शोभा है, जो **जगदीश्वर** और **पुरातन कवि** हैं, आदित्य-मण्डल में जो विराजमान हैं, जिन्हे साधु-गण '**गजानन**' कहते हैं, उन **भगवान् श्रीगणेश** को समयानुसार मैं प्राप्त करूँ ।।१७

जिनके तेज से **विघ्न-रूपी अन्धकार का नाश** हो जाता है, **वेदान्त-शास्त्र** में जिन्हें **आनन्द-घन परमात्मा** के नाम से गाया है, उन्हीं **हृदय में विराजमान गजानन** की मैं वन्दना करता हूँ ।।१८

जो बाल-सुलभ अज्ञता से **भगवान् शङ्कर** के जटा-जूट में स्थित **चन्द्र-खण्ड** को, अपना **टूटा हुआ दाँत** समझकर, अपनी सूँड़ द्वारा खींचने की इच्छा करते हैं, वे **भगवान् श्रीगणेश** मेरे ऐश्वर्य की वृद्धि करें ।।१९

**विघ्न-रूपी अर्गला** को हटाने के लिए जिन **मत्त गजानन** का ध्यान करते हुए **नारियल** और **केला** आदि फलों से सभी लोग पूजन-अर्चन करते हैं, उन्हीं **अभीष्ट फल-दाता भगवान् श्रीगणेश** की मैं वन्दना करता हूँ ।।२०

फल-श्रुति– अनेक प्रकार के **यज्ञों** और बहुत से **तप** के द्वारा जिनकी उपासना की जाती है, उन्हीं **आद्य गजराज-मुख भगवान् श्रीगणेश** की स्तुति जो इस स्तव-राज के द्वारा विधि-पूर्वक करते हैं, वे **भगवती लक्ष्मी** की सभी प्रकार की सम्पत्तियों को प्राप्त करते हैं ।।१

❖❖❖